~~Contemporary~~ Indian philosophy SEMESTER-VI Page No-1

CORE PAPER - XIII

Quest- श्री अरविन्द

Discribe the Evolution and Involution in evolutionism of Sri Aurobindo?

श्री अरविन्द के विकासवाद में अवरोहण और आरोहण की प्रक्रिया की विवेचना करें।

Ans- श्री अरविन्द के अनुसार विकास की प्रक्रिया और अवरोहण आरोहण इन दोनों को मिलाकर पूरी होती है। अवरोहण का अर्थ होता है निषेध और आरोहण का अर्थ होता है उन्मेष अर्थात आत्मा का संकोहीन जड़ में निषेध होना अवरोहण है, और जड़ से प्रभु की ओर उन्मेष या बढ़ना आरोहण है। इनमें पहले अवरोहण होता है और इसके पश्चात आरोहण होता है क्योंकि अवरोहण के बिना आरोहण होना संभव नहीं।

आत्मा के अतिमानस स्तर से नीचे की ओर अवरोहण होने पर इसमें परिमितता आने लगती है। इस प्रकार अतिमानस से मानस स्तर तक आने के कई निम्न स्तर जाते हैं—

(1) अधिमानस (Overmind):- यह अज्ञान में अतिमानस का प्रतिनिधि है इस प्रकार अतिमानस क्षेत्र में चेतना की उच्चतम अवस्था है इसमें सत्य को ग्रहण करने की क्षमता है।

(2) अन्तर्प्रज्ञा (Intuition):- यह चेतना की अधिमानस से निम्न अवस्था है जो की मानव के मानस— साथ हृदय, जीवन और शरीर और इन्द्रियों को भी प्रकाशित करती है।

(3) प्रदीप्त मानस (Illuminated mind):- यह अन्तर्प्रज्ञा से निम्न स्तर है क्योंकि यहाँ पर चेतन स्वयं सत्य को प्रकाशता है क्योंकि विचार दृष्टि के अधीन होता है।

(4) उच्चतर मानस (Higher mind):- इस स्तर के विषय में श्री अरविन्द ने कहा है कि "इसी में विषय को भावना विविधता से विचार करते हुए, बनाते हुए और प्रत्यय के आत्मशक्ति से उत्पन्न विचारों को प्रभावोत्पादक रूप में अनुभूति

करते हुए स्वयं में निहित तादात्म्य सत्य को ले जाने वाले मौलिक तादात्म्य से उत्पन्न होनेवाली स्वज्ञ सर्वज्ञता ही ज्ञान हृदय मानस का स्वभाव होता है इस प्रकार यह ज्ञान अधिमानस से निम्न चेतना की अवस्था है अर्थात् ज्ञान अधिमानस से चेतना का अवरोहण होता है। इसके पश्चात् आरोहण प्रारम्भ होता है अर्थात् चेतना उत्पन्न निम्न अवस्था को भोग करती हुई हृदय स्तर को ग्रहण करती जाती है जिसमें सर्वप्रथम चेतना पाई से प्राण और फिर मन से प्रकट होती है। उच्चतर मानस में ज्ञान का कुछ अंश प्रकट लगता है और ज्ञान का प्रकाश होना प्रारम्भ हो जाता है। इसी प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि अवरोहण और आरोहण दोनों प्रतिलोम क्रम है।

विवर्तन या विकास के नियम :-
(Laws of Evolution) :-

अरविन्द का कथन है कि जब उच्च निम्न चेतना में अवरोहण करता है तब वह निम्न को ~~परिवर्ति~~ परिवर्तित कर देता है परन्तु इससे स्वयं भी संकोचित और न्यून हो जाता है। जब निम्न का आरोहण होता है। तब उसका उन्नयन होता है परन्तु तभी वह उन्नयनकारी पदार्थ और शक्ति में परिवर्तन कर देता है। श्री अरविन्द के अनुसार इसमें निम्नलिखित तीन नियम कार्य करते हैं —

(1) प्रसारण :— भूत वस्तु में प्राण या जीवन का आविर्भाव करने के लिए विभिन्न द्वारा संकलन करण (Compleation) एवं संगठन (Organization) हो जाता है यह प्रसारण नियम कहलाता है।

(2) उन्नयन :— निम्न कोटि से उच्चतर कोटि में विकास नियम के द्वारा आरोहण होता है उसे उन्नयन कहा जाता है। जैसे - भूत के पूर्णरूप से उनके प्राणतत्व या जीवन संश्लिष्ट हो जाने पर

का उद्भव हो जाता है और जीवत्व के प्रति रूप से विकसित हो जाने पर मन का आविर्भाव हो जाता है।

(3) **समाकलन** — समाकलन से तात्पर्य विकास की निम्नतम कोटि से उच्चतर कोटि से पहुंचने तक निम्नतम को उच्चतम द्वारा अपने में स्वीकार लेने से है अर्थात् निम्नतम अवस्था उच्चतम अवस्था को साथ अन्दर रख से समायोजित एवं समाकालीन हो जाती है।

श्री अरविन्द के विकास का सिद्धान्त में एक विशेषता तो अतिमानस को सृजनात्मक शक्ति स्वीकार करना है तथा दूसरी व्यक्ति के साथ-साथ विश्व का भी विकास मानना है। वास्तव में न तो पाश्चात्य विकासवादियों ने ही और न भारतीय विकासवादी ने ही ~~इसके भारतीयों~~ इस समस्या का समाधान किया है कि सृजनात्मक शक्ति किसमें है जिसके द्वारा सृजन सम्भव होता है।

'अतिमानस' के पृथ्वी पर अवतरित होने पर शरीर, तनु, जीवत्व और मानस सभी रूपान्तरित हो जायेंगे। अभी तक आध्यात्मिक क्षेत्र में ही मान्यता थी कि शरीर, तनु, जीवत्व और मानस का कुछ स्वभाव जीवत्व परिवर्तित नहीं हो सकता ~~और मानस का~~ और इस पार्थिव जीवन में जीवन आत्मा से छुटकारा नहीं पाया जा सकता।"

(4) **व्यक्ति का विकास (Individual Evolution)** — श्री अरविन्द के अनुसार "व्यक्ति ही विश्व का मानव व्यक्ति और समाज का अनुभव तथा विश्व में ~~आत्माभिव्यक्ति~~ आत्माभिव्यक्ति के लिए मन, शरीर और जीवन का प्रयोग करने वाली एक आत्मा है। यह विकास मात्र प्रकृति द्वारा सम्भव नहीं गति योग के द्वारा ही व्यक्ति का पूर्ण विकास सम्भव है। श्री अरविन्द ने

योगों के अर्थ दिया है। व्यक्ति की चेतना का दिव्य चेतना से संयोग और जिस साधना द्वारा यह संयोग होता है यह दोनों साधना और साध्य ही वे योग कहलाते हैं। अरविन्द के योग के निम्नलिखित तीन पद बतलाते हैं।

(1) पुकार एवं प्रत्युत्तर :— (Call and Responds):—

श्री अरविन्द ने पुकार के लिए Aspiration शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ होता है आकांक्षा अर्थात् दिन रात प्रभु का चिन्तन, स्तुति, या प्रभु के प्रति अपने को व्याकुल करने के लिए 'पुकार'।

(2) शांति और समत्व :— पुकार एवं प्रत्युत्तर के फलस्वरूप जब चित्त शोधित होने लगता है तब हृदय के शुद्ध होने तथा योग का प्रयोग हो जाते है शांति का प्रादुर्भाव होता है।

(3) आत्मसमर्पण :— श्री अरविन्द ने आत्मसमर्पण पर बहुत बल दिया है। आत्म समर्पण का अर्थ है अपने आप को प्रभु के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित कर देना। निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि श्री अरविन्द के अनुसार समस्त विश्व का प्राण और जड़ इन तीन भागों में विभक्त है। जिसमें समस्त भौतिक जगत जड़ है। इससे ऊपर जीवन और मन तथा मन से ऊपर भी उच्चतर मानस प्रदीप्त मानस, सम्बोधि मानस और अधिमानस अज्ञान के अन्तर्गत है और इन सबसे ऊपर अतिमानस ज्ञान है।